September 2020

Date: 04.09.2020

Lecture No. 05

(1)

Dr. Madan Paswan,

Sub.:- History

B.A. Part- I (Hons.) Paper- I^st

पाठ्यक्रम Unit-II : Pre-Mauryan Period

(iii) Foreign Invasions — Iranian and Macedonian

ईरानी आक्रमण

उत्तर-पूर्व भारत में, छोटी रियासत और गणराज्य धीरे-धीरे मगध साम्राज्य में मिल गए। हालाँकि ई० पू० छठी शताब्दी में उत्तर-पश्चिम भारत ने एक अलग तस्वीर पेश की। कम्बोज, गान्धार और मद्रास जैसी कई छोटी रियासतों ने आपस में संघर्ष किए। इस क्षेत्र में मगध की तरह कोई शक्तिशाली साम्राज्य नहीं था, जो युद्धग्रस्त समुदायों को मिलाकर संगठित साम्राज्य बना सके। चूँकि यह क्षेत्र प्राकृतिक संसाधनों से समृद्ध था, इसने अपनी ओर पड़ोसियों का ध्यान आकर्षित किया। इसके अलावा, हिन्दूकुश के दर्रों से यहाँ आसानी से प्रवेश किया जा सकता था। ईरान के आकिमिनिया के शासकों ने, जिन्होंने अपने साम्राज्य का विस्तार उसी समय मगध साम्राज्य के राजकुमारों एवं राजकुमारों की तरह किया, उन्होंने उत्तर-पश्चिम सीमा पर राजनीतिक मतभेदों का लाभ उठाया। ईरान का शासक डारीयस ने ई०पू० 516 में उत्तर-पश्चिम भारत की सीमा में प्रवेश किया और पंजाब, सिन्धु के पश्चिमी भाग एवं सिन्ध पर कब्जा कर लिया। यह क्षेत्र 20वें प्रान्त या ईरान के रियासत में परिवर्तित हो गया। जिसमें कुल 28 रियासतें थीं। जिसमें — (1) सिन्ध (2) उत्तर-पश्चिमी सीमा (3) पंजाब का हिस्सा शामिल था, जो सिन्धु के पश्चिम में था। यह पंजाब का सबसे उपजाऊ और घनी आबादी वाला हिस्सा था; जो सिन्धु के पश्चिम में था। यहाँ से 360 टैलेण्ट सोने का अनुदान मिलता था, जो ईरान को अपने एशियाई प्रान्तों से प्राप्त कुल राजस्व का 1/3 हिस्सा था।

ईरानी सेना में भारतीय प्रजा को भी भर्ती किया जाता था। डेरियस के उत्तराधिकारी जैरक्सेस ने यूनानियों के खिलाफ लम्बे युद्ध के लिए भारतीयों को अपनी सेना में भर्ती किया। प्रतीत होता है कि एलेक्जेण्डर के भारत पर आक्रमण के पहले भारत ईरानी साम्राज्य का एक हिस्सा था।

Continue.........